Hindu College
DEPARTMENT OF SANSKRIT
UNIVERSITY OF DELHI
DELHI - 110007
PHONE : 2766 7184
FAX : 2766 7284
E-mail : hinducol@del3.vsnl.net.in
www.hinducollege.org

A National Conference (23-24 February 2012)
on
Women Empowerment and Sanskrit Literature

With the advent of the twentieth century, women awakened to their rights and by the end of the century, their awareness resulted in the establishment of a new paradigm of women's empowerment movement. Empowerment is a global concept through which women unify their strength and become self-dependent. The echoes of the worldwide movement for women's empowerment were heard in India too. As a result, the oppressed, subjugated and helpless women in the country started to take on a new voice.

It is a cause for concern that in a country where even the creator of the universe is considered incomplete without the feminine force, the status of women is pathetic. What was the position of women in the various pre modern historical periods? The nature of women's empowerment can be examined in the context of ancient India too. A balanced perspective on the status and role of women can be arrived at only by delving into Sanskrit literature.

In order to explore the status of women's and their participation in the development of the country and the society, we are organizing a two day national conference during the month of February. In this conference, Sanskrit literature of Veda, Ramayana, Mahabharata, Laghu Smriti, Arthashastra, Dharmashastra, Kamashastra, Katha-Aakyayika, grammar, poetry, historical poetry, drama, philosophy should be the base for evaluating the power, impairment or empowerment of women from the following perspectives –

1. Administrative
2. Biological
3. Creative writing
4. Economical
5. Educational
6. Inheritance
7. Literary
8. Management
9. Martial /Millitary
10. Mating (Rati Kreeda)

Hindu College
DEPARTMENT OF SANSKRIT
UNIVERSITY OF DELHI
DELHI - 110007
PHONE : 2766 7184
FAX : 2766 7284
E-mail : hinducol@del3.vsnl.net.in
www.hinducollege.org

11. Music and fine art
12. Political
13. Occupational and professional skills
14. Psychological
15. Religious
16. Social
17. Technological
18. Other areas related to the conference subject

An abstract of the research paper has to be submitted on or before 15 December, 2011 in 300 – 400 words clearly spelling out the framework. The abstract can be sent via email or by post. If the abstract is acceptable, the contributors will be intimated. Then participants will present their papers during the conference. The conference organizers reserve the right to publish the selected papers. Papers can be submitted in Hindi, English or Sanskrit.

Principal
(Prof. (Dr.) Vinay Kumar Srivastava)

Convener
(Dr. Anita Rajpal)
(M) 09971108979
anitabrajpal@rediffmail.com
anitabrajpal@gmail.com

Hindu College
DEPARTMENT OF SANSKRIT
UNIVERSITY OF DELHI
DELHI - 110007
PHONE : 2766 7184
FAX : 2766 7284
E-mail : hinducol@del3.vsnl.net.in
www.hinducollege.org

राष्ट्रिय संगोष्ठी

(23-24 फरवरी, 2012)

नारी सशक्तीकरण और संस्कृत वाङ्मय

बीसवीं शताब्दी में नारी अपने अधिकारों को पाने के लिए जागृत हुई। इस जागृति के फलस्वरूप 'नारी सशक्तीकरण' का रूप सामने आया। 'सशक्तीकरण' प्रक्रिया है, जिसके द्वारा महिलाएँ अपनी शक्ति के साथ संयुक्त होकर सशक्त हो रही है। विश्वव्यापी नारी सशक्तीकरण के स्वर भारत में भी गूँजे। इसकी अनूगूँज के प्रभाव से सदियों से दबी सहमी, दीन, असहाय नारी भी प्राणवान हो उठी। भारत, जहाँ नारी रूपी शक्ति के बिना सृष्टिकर्त्ता भी अधूरा माना जाता है। वहाँ की नारियाँ असहाय एवं अबला है। यह विचारणीय विषय है। प्राचीन भारतीय सभ्यता में नारी की सामाजिक स्थिति क्या थी? सशक्तीकरण के सन्दर्भ में इसका अध्ययन करना प्रासंगिक है। यह विषय विस्तृत है। फलतः इतिहास के विभिन्न युगों में नारी की स्थिति तथा उसकी गतिविधियों का सम्यक् अवलोकन करना होगा। जिससे प्राचीन भारतीय परिप्रेक्ष्य में भी स्त्री सशक्तीकरण के स्वरूप को समझा जा सके। इसके लिए संस्कृत वाङ्मय का अवगाहन करना होगा। आज से पूर्व भी नारी का देश तथा समाज के उत्थान में योगदान रहा है अथवा नहीं। इसका मूल्यांकन करने के लिए द्विदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया जा रहा है।

इस संगोष्ठी में संस्कृत वाङ्मय के वेद, उपनिषद्, रामायण, महाभारत, लघुस्मृति, अर्थशास्त्र, धर्मशास्त्र, व्याकरणशास्त्र, कामशास्त्र, काव्य, ऐतिहासिक काव्य, नाटक, कथा-आख्यायिका, दर्शन पर आधारित विभिन्न सत्रों पर निम्न बिन्दुओं पर नारी के सशक्त, अक्षम अथवा सशक्तीकरण के रूप में शोध-पत्र आमन्त्रित है-

1. आर्थिक
2. जैव-वैज्ञानिक
3. तकनीकी
4. धार्मिक
5. प्रबन्धन
6. प्रशासनिक

Hindu College
DEPARTMENT OF SANSKRIT
UNIVERSITY OF DELHI
DELHI - 110007
PHONE : 2766 7184
FAX : 2766 7284
E-mail : hinducol@del3.vsnl.net.in
www.hinducollege.org

7. पैतृक सम्पत्ति
8. मनोवैज्ञानिक
9. मौलिक लेखन
10. रति-क्रीडा
11. राजनैतिक
12. व्यवसायिक एवं कौशलात्मक
13. संगीत एवं कला
14. सामाजिक
15. साहित्यिक
16. सैन्य प्रशिक्षण
17. शैक्षणिक
18. अन्य कोई विषय जो विषय से सम्बन्धित हो।

शोध-पत्र का सारांश 300-400 शब्दों में 15 दिसम्बर 2011 तक अवश्य प्रेषित करे। शोध-पत्र का सारांश ई-मेल अथवा डाक से भी भेज सकते है। कृपया सारांश में शोध की दिशा का भी निर्देश करें। शोध-पत्र के मौलिक तथा अर्थपूर्ण होने पर प्रस्तुतकर्ता को सूचित कर दिया जायेगा। शोध-पत्र सारांश का चयन होने पर ही संगोष्ठी में पत्र प्रस्तुत किया जा सकेगा। चयनित शोध-पत्रों को प्रकाशित भी किया जायेगा। शोध-पत्र का माध्यम हिन्दी, अंग्रेजी अथवा संस्कृत हो सकता है।

प्रधानाचार्य
(प्रो० (डॉ०) विनय कुमार श्रीवास्तव)

संयोजिका
(डॉ० अनीता राजपाल)
(M) 09971108979
anitabrajpal@rediffmail.com
anitabrajpal@gmail.com